



बाल विकास और अधिगम में चित्रों की भूमिका

राजेश कुमार निमेश

सह-आचार्य, एमपीडी, सीआईईटी, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

ABSTRACT

यह आलेख बाल्यावस्था में चित्रों की भूमिका को एक प्रभावी अधिगम उपकरण के रूप में विश्लेषित करता है, विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में। बाल्यावस्था मस्तिष्क विकास का संवेदनशील चरण है, जहाँ दृश्य, श्रव्य और अनुभवात्मक माध्यम सीखने की नींव रखते हैं। चित्र बच्चों को जटिल अवधारणाओं को सरल रूप में समझने, शब्दावली और पठन कौशल विकसित करने तथा कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता को बढ़ाने में सहायक होते हैं। द्वि-कोड सिद्धांत के अनुसार दृश्य और भाषाई जानकारी का संयोजन सीखने को अधिक प्रभावी और स्थायी बनाता है।

आलेख में यह भी स्पष्ट किया गया है कि चित्र संज्ञानात्मक विकास, भावनात्मक समझ, सहानुभूति, तथा समस्या समाधान कौशल को सुदृढ़ करते हैं। वे विभिन्न अधिगम शैलियों/कृतृदृश्य, श्रव्य और क्रियात्मक/कृको समर्थन प्रदान करते हैं और कक्षा में सहभागिता व ध्यान अवधि को बढ़ाते हैं। NEP 2020 बाल-केंद्रित, अनुभवात्मक और बहु-संवेदी शिक्षण पर बल देती है, जिसमें चित्र आधारित सामग्री विशेष रूप से प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा और आधारभूत साक्षरता के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक है। निष्कर्षतः, चित्र समावेशी, प्रभावी और आनंदमय अधिगम को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

KEYWORDS: बाल विकास, प्रारंभिक साक्षरता, संज्ञानात्मक विकास, रचनात्मकता, सहानुभूति, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, भाषा कौशल।

परिचय

बाल्यावस्था जीवन का वह महत्वपूर्ण चरण है जिसमें मस्तिष्क तीव्र गति से विकसित होता है। इस अवधि में प्राप्त अनुभव भविष्य के अधिगम और सामाजिक-भावनात्मक विकास की नींव रखते हैं (ब्रूनर, 1986)। सीखने की प्रक्रिया केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित नहीं होती, बल्कि दृश्य, श्रव्य और अनुभवात्मक माध्यमों के माध्यम से भी संचालित होती है।

इसके साथ साथ चित्र बच्चों के लिए ज्ञान के द्वार खोलने का कार्य करते हैं। जब कोई भी बच्चा कहानी की पुस्तक में पात्रों, परिवेश और घटनाओं को चित्रों के माध्यम से देखता है, तो वह केवल पढ़ नहीं रहा होता, बल्कि कल्पना कर रहा होता है, अनुभव कर रहा होता है और अर्थ का निर्माण कर रहा होता है कि यह पात्र वास्तविकता में कैसे प्रतीत होते होंगे और उनके साथ साथ किसी गतिविधि में भाग लिया जाए तो कैसा लगेगा।

लेव वायगोत्स्की (1978) के अनुसार, सीखना सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से होता है, साथ ही "स्कैफोल्डिंग" की अवधारणा बताती है कि वयस्क या अधिक ज्ञानवान व्यक्ति बच्चों को सहारा देकर उनके विकास को आगे बढ़ाते हैं। चित्र इस सहारे का दृश्य रूप हैं। इसी तरह, जीन पियाजे (1952) के अनुसार, बच्चे दोस अनुभवों के माध्यम से सीखते हैं, और चित्र अमूर्त शब्दों को दोस रूप में प्रस्तुत करते हैं।

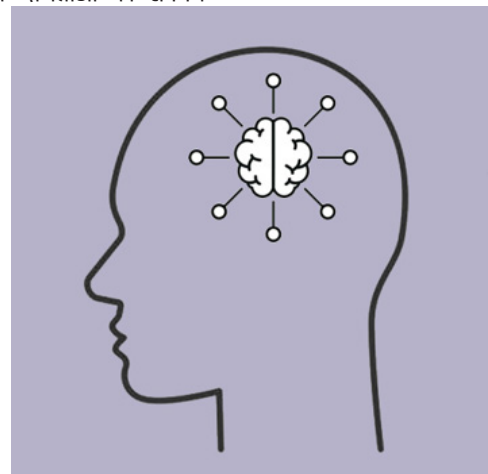
चित्रों का महत्व



चित्र बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को अधिक सरल, रोचक और प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे जटिल अवधारणाओं को समझने में सहायक होते हैं और बच्चों की शब्दावली व पठन समझ को मजबूत करते हैं (सेनेचल और लेफेवर, 2002)। चित्र बच्चों की कल्पनाशक्ति, रचनात्मकता और भावनात्मक समझ को भी विकसित करते हैं, जिससे उनका समग्र विकास संतुलित और प्रभावी बनता है। पठन अनुभव में चित्र कहानी को जीवंत बनाकर बच्चों को पात्रों, घटनाओं और भावनाओं के साथ जोड़ते हैं। इसके माध्यम से बच्चे कथा में गहरी रुचि रखते हैं, सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और उनकी पठन क्षमता में वृद्धि होती है।

चित्र अमूर्त शब्दों और विचारों को दोस रूप में प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, "विशाल", "दुखी" या "साहसी" जैसे शब्द बच्चों के लिए कठिन हो सकते हैं, लेकिन चित्र इन शब्दों का स्पष्ट संदर्भ देते हैं। दृश्य संकेत नए विचारों और अवधारणाओं को समझने में सहायक होते हैं और बच्चों की शब्दावली और तर्क क्षमता को विस्तारित करते हैं। साथ ही, चित्र स्मृति और पुनःस्मरण को भी सुदृढ़ करते हैं। दृश्य और शब्दों का संयोजन जानकारी को लंबे समय तक याद रखने में मदद करता है (पैवियो, 1991), जिससे सीखने का अनुभव अधिक प्रभावी और स्थायी बनता है।

संज्ञानात्मक क्षमताओं का संवर्धन



द्वि-कोड सिद्धांत के अनुसार, जब दृश्य और भाषाई जानकारी को एक साथ प्रस्तुत किया जाता है, तो मस्तिष्क उन्हें दो अलग लेकिन संबंधित रूपों में संग्रहीत करता है, जिससे सीखना अधिक प्रभावी होता है और बच्चों की स्मृति तथा दीर्घकालिक पुनःस्मरण क्षमता मजबूत होती है (पैवियो, 1991)। चित्रों में रंग, आकार, हाव-भाव और प्रतीक का अवलोकन बच्चों में विश्लेषणात्मक सोच को बढ़ावा देता है। वे तुलना करना, कारण-परिणाम समझना और विवरणों पर ध्यान देना सीखते हैं, जिससे आलोचनात्मक चिंतन और निर्णय लेने की क्षमता सुदृढ़ होती है (Bruner, 1986)। इसके अतिरिक्त, स्वयं चित्र बनाना बच्चों के समस्या समाधान कौशल को विकसित करता है। वे योजना बनाना, रंग और आकार चुनना और परिणामों में सुधार करना सीखते हैं। इस प्रक्रिया में बच्चे यह भी समझते हैं कि गलतियाँ सीखने का हिस्सा हैं, जिससे धैर्य, रचनात्मकता और आत्मनिर्भरता मजबूत होती है (बंडुरा, 1977)।

भाषा एवं साक्षरता कौशल को बढ़ावा देना

कई बार बच्चों को शब्दावली याद करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। चित्र बच्चों के शब्दावली विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे नए शब्दों को अर्थपूर्ण संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं, जिससे बच्चे उनका सही अर्थ आसानी से समझ पाते हैं। दृश्य संकेत शब्द और वस्तु के बीच संबंध स्थापित करते हैं, जिससे बच्चों की भाषा समृद्ध होती है और वे नए शब्दों का प्रयोग आत्मविश्वास के साथ करने लगते हैं (सेनेचल और लेफेवर, 2002)। इसके साथ ही, अभिभावक-शिशु संवाद के दौरान चित्रों पर चर्चा करने से बच्चों की कथात्मक क्षमता भी मजबूत होती है। जब बच्चे चित्र देखकर घटनाओं का वर्णन करते हैं, और अनुमान लगाते हैं तथा पात्रों की भावनाओं को समझते हैं, तब उनकी पठन समझ, तर्क शक्ति और अभिव्यक्ति क्षमता में सुधार होने लगता है (व्हाइटहर्सट और लोनिगन, 1998)। इसके अतिरिक्त, चित्र शुरुआती पाठकों को शब्दों का अर्थ समझने में सहायक होते हैं। दृश्य संदर्भ और शब्दों का संयोजन शब्द पहचान और उच्चारण क्षमता को बढ़ाता है, जिससे बच्चे पढ़ने में अधिक आत्मविश्वासी और कुशल बनते हैं, और उनकी प्रारंभिक साक्षरता मजबूत होती है (व्हाइटहर्सट और लोनिगन, 1998)।

सृजनात्मकता और कल्पनाशक्ति का विकास



बच्चों द्वारा चित्र बनाना उनकी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने का प्रभावी माध्यम है, जो उनकी आत्म-अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है। इस प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे अपनी भावनाओं को समझना और व्यक्त करना सीखते हैं, जिससे उनकी आत्म-जागरूकता, भावनात्मक संतुलन और सकारात्मक व्यक्तित्व का विकास होता है (जीस, 2009)। इसके साथ ही, चित्रित कहानियाँ बच्चों को काल्पनिक संसारों की सैर कराती हैं, जहाँ वे नए पात्रों, स्थानों और घटनाओं की कल्पना करते हैं। यह अनुभव उनकी रचनात्मक सोच को विस्तृत करता है और समस्या समाधान कौशल को विकसित करता है (ब्रूनर, 1986)। इसके अलावा, विभिन्न कला माध्यमों जैसे रंग, पेंसिल, जलरंग या कोलाजकृता प्रयोग बच्चों में लचीलापन, मौलिकता और नवीन सोच को प्रोत्साहित करता है। बच्चे नए तरीकों का प्रयोग करते हैं और अपनी सीखने की प्रक्रिया को और अधिक सृजनात्मक और अनुभवात्मक बनाते हैं, जिससे उनके संज्ञानात्मक और रचनात्मक कौशल मजबूत होते हैं (बंडुरा, 1977)।

भावनात्मक समझ विकसित करना

भावनात्मक बुद्धिमत्ता बच्चे के समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और यह उसकी सफलता, संबंधों तथा मानसिक संतुलन को प्रभावित करती है। इसमें अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानना, समझना, नियंत्रित करना और सही तरीके से व्यक्त करना शामिल है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास की शुरुआत बच्चों को खुशी, दुख, गुस्सा और डर जैसी मूल भावनाओं की पहचान सिखाने से होती है। कहानियों, चेहरे के भावों और दैनिक अनुभवों के माध्यम से उन्हें समझाया जा सकता है। भावनाओं पर खुलकर बातचीत करने से बच्चे अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करना सीखते हैं। उचित मार्गदर्शन, गतिविधियों और पुस्तकों के माध्यम से सहानुभूति, संप्रेषण और आत्म-अभिव्यक्ति का विकास होता है।

सहभागिता और ध्यान अवधि में वृद्धि



चित्र बच्चों का ध्यान आकर्षित करने में अत्यंत प्रभावी होते हैं। उनके रंगीन और दृश्य रूप से उत्तेजक होने के कारण बच्चे तुरंत उन्हें देखना और समझना चाहते हैं, जिससे उनकी जिज्ञासा और सीखने की प्रेरणा बढ़ती है (पाइवियो, 1991)। इसके साथ ही, "तुम्हें क्या दिख रहा है?" या "अब आगे क्या होगा?" जैसे प्रश्न बच्चों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं। चित्र आधारित चर्चा पठन अनुभव को अधिक संवादात्मक और अर्थपूर्ण बनाती है, जिससे बच्चों की सोचने-समझने की क्षमता, भाषाई कौशल और कथा समझ में सुधार होता है (सेनेचल और लेफेवर, 2002)। इसके अलावा, चित्र कहानी में निरंतर रुचि बनाए रखने में सहायक होते हैं। जब बच्चे पात्रों, रंगों और घटनाओं को देखते और समझते हैं, तो उनका ध्यान स्थिर रहता है और सीखने की प्रक्रिया और अधिक प्रभावी और आनंददायक बनती है (ब्रूनर, 1986)।

बहुआयामी अधिगम दृष्टिकोण

चित्र विभिन्न अधिगम शैलियों के समर्थन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दृश्य शिक्षार्थियों के लिए, जो चित्रों और दृश्य संकेतों के माध्यम से सबसे प्रभावी रूप से सीखते हैं, चित्र सर्वोत्तम माध्यम होते हैं क्योंकि वे जानकारी जल्दी समझते हैं, याद रखते हैं और उसे व्यावहारिक संदर्भ में लागू कर सकते हैं (पाइवियो, 1991)। वहीं, श्रव्य शिक्षार्थियों को चित्रों के साथ पढ़ाई करने पर बहु-संवेदी अनुभव प्राप्त होता है, जिससे उनकी भाषा और शब्दावली कौशल मजबूत होते हैं और समझ गहरी होती है (व्हाइटहर्सट एंड लोनिगन, 1998)। इसके अतिरिक्त, गतिशील शिक्षार्थी चित्रों को अभिनय, नकल या स्वयं चित्र बनाकर पुनर्निर्मित करते हैं, जिससे उनका सीखना स्थायी और प्रभावी बनता है। इस प्रक्रिया से उनकी स्मृति, रचनात्मकता और समस्या समाधान कौशल में भी सुधार होता है (बंडुरा, 1977)।

निष्कर्ष

चित्र बाल विकास और अधिगम को बढ़ाने में संसाधन की भूमिका निभाते हैं। वे संज्ञानात्मक वृद्धि, भाषा विकास, रचनात्मकता, सहानुभूति और ध्यान क्षमता को सुदृढ़ करते हैं। विकासात्मक सिद्धांतों और शोध निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट है कि चित्र केवल सजावट नहीं, बल्कि सीखने का प्रभावी माध्यम हैं, जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इस बात पर बल देती है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के स्तर पर शिक्षा बाल-केंद्रित, अनुभवात्मक और आनंदमय होनी चाहिए। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि यदि माता-पिता और शिक्षक सचेत रूप

से चित्रों को दैनिक जीवन और शिक्षण में शामिल करें, तो वे न केवल बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी बना सकते हैं, बल्कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों/कृषि से रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समग्र विकास/को भी सशक्त रूप से प्राप्त कर सकते हैं।

संदर्भ:

1. बंदूरा, (1977). सोशल लर्निंग थ्योरी। प्रेंटिस हॉल। https://www.asecib.ase.ro/mps/Bandura_SocialLearningTheory.pdf
2. ब्लुनर(1986). एक्जुअल माइंड्स, पॉसिबल वर्ल्ड्स। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। <https://www.jstor.org/stable/j.ctv26070s7>
3. पाइवियो (1991). ड्यूल कोडिंग थ्योरी/रेट्रोस्पेक्ट एंड करंट स्टेटस। कैनेडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी, 45(3), 255–287। <https://doi.org/10.1037/h0084295>
4. पियाजे (1952). द ओरिजिन्स ऑफ इंटेलिजेंस इन चिल्ड्रेन। (एम. कुक, अनुवादक)। डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी। <https://doi.org/10.1037/11494-000>
5. सेनेशाल और लेफेब्रे (2002). बच्चों के पठन कौशल के विकास में अभिभावकों की भागीदारी। चाइल्ड डेवलपमेंट, 73(2), 445–460। <https://doi.org/10.1111/1467-8624.00417>
6. वाइगोत्स्की (1978). माइंड इन सोसाइटी/उच्च मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का विकास। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। <https://home.fau.edu/musgrove/web/vygotsky1978.pdf>
7. व्हाइटहर्सट और लोनिगन (1998). बाल विकास और प्रारंभिक साक्षरता। चाइल्ड डेवलपमेंट, 69(3), 848–872। <https://doi.org/10.1111/j.1467-8624.1998.tb06247.x>
8. जीसी, पी. डी. (2009). वर्तमान साहित्य चयन का उपयोग करके छोटे बच्चों में सहानुभूति के विकास को बढ़ावा देना। अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन जर्नल, 36(4), 301–308। <https://eric.ed.gov/?id=EJ836818>